Paper - I

MT

2017 1100

MT - HINDI (ENTIRE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - SEMI PRELIM - I - PAPER - I

Time : 3 Hours **Model Answer Paper** **Max. Marks : 80**

विभाग 1 - गद्य

उ.1. **(क) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**

1) i) **कृति पूर्ण कीजिए।** **1**

ii) **गद्यांश से दो ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हो।** **1**

(1) **चाय -** बगीचे के मैनेजर ने क्या बनवाकर मँगाई ?

(2) **कैमरा -** सूरज डूब जाने से क्या बेकार हो गया ?

2) **आकृति पूर्ण कीजिए।** **2**

3) i) **निम्नलिखित शब्दों को मानक वर्तनी के अनुसार लिखिए।** **1**

(1) शुध्द - शुद्ध (2) चिरपरिचित - चिर-परिचित

ii) **निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए।** **1**

(1) आय - व्यय (2) प्रभाव - कुप्रभाव

4) हमारे देश विशाल है । हमारे देश में विविधता अनेक रूपों में देखते को मिलती है । यहाँ अनेक प्रांत हैं। हर प्रांत की अपनी भाषा, अपनी वेशभूषा, अपने रीति-रिवाज और अपना खान-पान है। हमारे देश में अनेक धर्म, जातियाँ और सबके अलग-अलग त्यौहार भी हैं। हम भारतवासी होली, दीपावली, ईद, क्रिसमस, महावीर जयंती आदि त्यौहार मनाते हैं । फिर भी हम सब भारतीय संस्कृति के धागे में बँधे हुए हैं । यही अनेकता में एकता हमारी विशिष्टता है । **2**

उ.1. (ख) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **आकृति पूर्ण कीजिए।** **1**

(1) **प्रीति को छह वर्ष की उम्र में इस बात का पता चला**
आँख की बीमारी का

(2) **प्रीति इन अक्षरों को नहीं पहचान पाती थीं**
सामान आकृतिवाले अक्षरों को

ii) **समझकर लिखिए।** **1**

(1) कुछ ही समय में उनकी दृष्टि चली जाएगी ।

(2) वस्तुओं और रंगो को

2) i) **वर्तुल में सही उत्तर लिखिए।** **1**

क्रियाकलाप के जरिए | **इस प्रकार प्रीति को सिखाते थे पिता** | गतिविधि के जरिए

ii) **सत्य या असत्य पहचानकर लिखिए।** **1**

(1) सत्य (2) असत्य

3) i) **विरुद्धार्थी शब्द लिखिए।** **1**

(1) समय × असमय (2) सुविधा × असुविधा

ii) **समानार्थी शब्द लिखिए ।** **1**

(1) दृष्टि - नजर (2) आत्मसात - अपनाना

4) जी हाँ, मैं एक अंधा व्यक्ति हूँ। जन्म से ही इस अपंगता को भोग रहा हूँ। न मैं लोगों के शारीरिक बनावट को जानता हूँ, न उनके रंग रूप को। मेरे लिए सभी रंग बेरंग हैं। हरियाली भी मेरे लिए तो काली है। दृष्टि के सिवा मेरी अन्य ज्ञानेन्द्रियाँ पूरी तरह से काम करती हैं। स्पर्श, गंध, स्वाद, श्रवण के साथ जीने में बहुत सुबिधा और सहायता मिलती है। परंतु दृष्टि के बिना जीवन में सब कुछ सूना है। कहते हैं कि दृष्टि नहीं तो सृष्टि नहीं। दृष्टि के अभाव में यह कथन मेरे लिए सच साबित हो रहा है। **2**

उ.1. (ग) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **उत्तर लिखिए।** **½**

बिना श्रम किए जो भोजन करता है, वह व्यक्ति चोर है।

ii) **उचित विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।** **½**

महात्मा गांधी का समस्त जीवनदर्शन **श्रम - सापेक्ष** था।

2) **आकृति पूर्ण कीजिए।** **1**

अपराधों में वृद्धि होना	← **बापू की नीतियों की उपेक्षा करने का परिणाम** →	बेरोजगारी पर नियंत्रण न होना।

3) मनुष्य के जीवन में श्रम का बड़ा महत्व है। श्रम का अर्थ है- मेहनत। श्रम सफलता की कुंजी है। अंग्रेजी में कहावत है- (Work is Worship) सचमुच काम ही ईश्वर की सच्ची पूजा है। जहाँ श्रम है वहीं स्वावलंबन है। और जहाँ स्वावलंबन है वहीं स्वर्ग है। किसी की दया पर जीना मृत्यु के समान होता है। अपाहिज व्यक्ति भी दूसरों के भरोसे जीना पसंद नहीं करता। वह परिश्रम करके सम्मान की रोटी खाना चाहता है। किसान के श्रम से ही हम सबका पेट भरता है। डाक्टरों का श्रम ही मरीजों को नया जीवन देता है। विद्यार्थी श्रम करके ही विद्या प्राप्त करते हैं। श्रम करने वाले प्राय: स्वस्थ और निरोगी होते हैं। उनकी पाचन शक्ति अच्छी रहती है। श्रम करने से उनका अच्छा व्यायाम हो जाता है। सचमुच जीवन में सफलता के फूल श्रम के पौधे पर ही खिलते हैं। **2**

विभाग 2 - पद्य

उ.2. (च) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **1**

1) i) (1) एक प्राण जैसा।

(2) एक स्वर और एक गीत के जैसा।

ii) **उत्तर लिखिए।** **1**

(1) विषाद की निशा बीत रही है।

(2) प्रयाण की दिशा दिखने लगी है।

2) **समझकर लिखिए।** **1**

i) (1) सुख और प्रसन्नता से भरी दिशा।

(2) प्रगति की दिशा।

ii) (1) किसकी निशा बीत रही है ? **1**

(2) कौन-सी दिशा दिखने लगी है ?

3) i) (1) विहान - गान (2) निशा - दिशा **1**

ii) **विरुद्धार्थी शब्द लिखिए।** **1**

(1) विषाद × हर्ष (2) निशा × उषा

4) कवि का कहना है कि अब नई सुबह हुई है। दुख-दर्द की रातें समाप्त हो गई हैं। सुख और प्रसन्नता से भरी दिशाएँ दिखाई देने लगी हैं। अब हमें उस माहौल में जाना है, जहाँ निर्भयता हो। **2**

उ.2. **(छ) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**

1) i) **समझकर लिखिए।** **1**

(1) **इनके लिए हुई है, घाट पर पूरी व्यवस्था** → डूबने वालों के लिए

(2) **इसका हनन हो रहा है।** → जनता के अधिकारों का

ii) **उत्तर लिखिए।** **1**

(1) रक्त नसों में खौल रहा है।

(2) मंच पर सुविधा नहीं है।

2) i) **सत्य या असत्य लिखिए।** **1**

(1) सत्य

(2) असत्य

	ii) **सही पर्याय चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए।** (1) आम आदमी की घुटन को अभिव्यक्ति के लिए मंच उपलब्ध नहीं है क्योंकि **आज के दौर में चारों ओर अव्यवस्था का ही बोलबाला है।** (2) **नेपथ्य में** बात कहने की संभावना बची हुई है।	**1**
3)	i) (1) घाट - घाट का पानी पीना। (2) मौत के घाट उतार देना।	½ ½
	ii) **विरुद्धार्थी शब्द लिखिए।** (1) सुविधा × असुविधा (2) शौक × अरुचि	**1**
4)	कवि दुष्यंत कुमार जी का प्रबल विश्वास है कि आज के दौर में यहाँ अव्यवस्था का ही बोलबाला है। वहाँ सच्चाई सामने लाने की प्रथा अब दम तोड़ रही है । आम आदमी की घुटन को अभिव्यक्ति के लिए मंच उपलब्ध नहीं है । ऐसी परिस्थिति में अब सिर्फ परदे के पीछे ही छिपकर या किसी के कान में अपनी बात अभिव्यक्त कर पाने की संभावना शेष है ।	**2**
	विभाग - 3 - पूरक पठन	
उ.3.	**पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**	**(4)**
1)	i) **कृति पूर्ण कीजिए।** 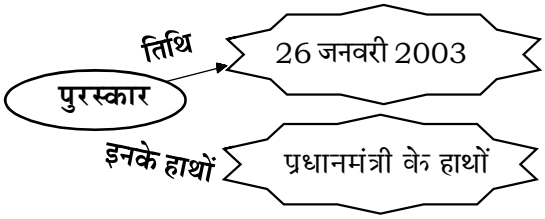 	**1**
	ii) (1) रजत पदक (2) प्रशस्तिपत्र (3) नकद पुरस्कार	**1**
2)	वीर बालक देश की अमानत हैं। वे अपनी बहादुरी एवं वीरता से दूसरों की जान बचाते हैं। वीरता का कार्य करते समय वे अपने प्राणों की भी परवाह नहीं करते हैं, वे सिर्फ मानवता के बारे में ही सोचते हैं। वीर बालक आगे चलकर देश की सेवा करते हैं। वे फौजी अफसर या पुलिस अधिकारी बनकर देश का नाम रोशन करते हैं। समाज में व्याप्त बुराइयों एवं गुंडागर्दी को समाप्त करने के लिए वे प्रयत्नशील रहते हैं। अत: वीर बालक देश की संपत्ति होते हैं।	**2**

विभाग - 4 - व्याकरण

उ.4. सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **निम्नलिखित शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए।** ½
संघर्ष ही जीवन है ।

ii) **अधोरेखांकित शब्द का भेद पहचानिए।** ½
कर्तव्य - संज्ञा

2) **निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके लिखिए।** 1
कबरी **की** हत्या के लिए उसने कमर कस **ली** ।

3) i) **निम्नलिखित सहायक क्रिया का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** ½
सकना - पंडित परमसुख की बात वे टाल न **सके** ।

ii) **सहायक क्रिया छाँटकर लिखिए।** ½
गई (जाना) - सहायक क्रिया ।

4) **प्रेरणार्थक क्रिया के रूप लिखिए।** 1

क्रिया	**प्रथम प्रेरणार्थक**	**द्‌वितीय प्रेरणार्थक**
भूलना	भुलाना	भुलवाना

5) i) **अव्यय का वाक्य में प्रयोग कीजिए।** 1
अभी - गुरु जी **अभी** नहीं आए ।

ii) **अव्यय पहचानकर उसका भेद लिखिए।** 1
अरे बाप रे ! विस्मयादिबोधक अव्यय

6) **कालपरिवर्तन कीजिए।** 2
i) घोड़ा बेदम हो जाएगा ।
ii) दोनों चुपचाप चल रहे थे ।

7) i) **मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में उचित प्रयोग कीजिए।** 1
नेत्र बेचकर चित्र खरीदना - बिना विचारे काम करना ।
वाक्य : विवाह की खरीददारी करते समय कई बार लोग **नेत्र बेचकर चित्र खरीदते हैं** ।

ii) **अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए।** 1
जब तक माँ का दिया हुआ काम पूरा नहीं होगा मनीषा को **चैन न मिलेगा ।**

विभाग - 5 - रचना

उ.**5.** **1)**	**परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :** **निम्नलिखित में से किसी एक पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए।**	**5**

सागर शर्मा
105/ जवाहर चौक,
मुंबई ।
दिनांक - 5 मार्च, 2017

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाचार्य जी,
जवाहर विद्यालय, गोरेगाँव,
मुंबई ।

विषय : <u>लिपिक पद के लिए प्रार्थनापत्र ।</u>

माननीय महोदय,

मैंने नवभारत टाइम्स में कल पढ़ा कि आपके विद्यालय में लिपिक की जरूरत है । उक्त पद के लिए मैं आवेदन पत्र भेज रहा हूँ ।

मेरे संबंध में जानकारी इस तरह है :

एस.एस.सी. परीक्षा – मार्च, 2011 (प्रथम श्रेणी)
एच.एस.सी. परीक्षा – मार्च, 2013 (प्रथम श्रेणी)
संगणक का अनुभव – तीन वर्ष

मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यदि मुझे अवसर मिला तो अपने आपको एक अच्छा और जिम्मेदार लिपिक साबित करने का प्रयास करूँगा ।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ ।

धन्यवाद !

भवदीय,
सागर शर्मा ।

संलग्न प्रमाणित प्रतिलिपियाँ :

1) एस.एस.सी. प्रमाण पत्र के साथ अंकतालिका ।
2) एच.एस.सी. प्रमाण पत्र के साथ अंकतालिका ।
3) संगणक संबंधी अनुभव प्रमाण पत्र ।

टिकट

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाचार्य जी,
जवाहर विद्यालय,
गोरेगाँव,
मुंबई ।

प्रेषक,
सागर शर्मा,
105 / जवाहर चौक,
मुंबई ।

अथवा

रमा चिटणीस
10 / 405, महावीर पथ,
सांगली।
दिनांक - 5 मार्च, 2017

सेवा में,
श्रीमान व्यवस्थापक जी,
सूरज पुस्तक भंडार, लक्ष्मी पथ,
पुणे ।

विषय : पुस्तकों की माँग हेतु प्रार्थना पत्र ।

माननीय महोदय,

आपके द्वारा भेजा गया सूचीपत्र प्राप्त हुआ। मुझे जिन पुस्तकों की आवश्यकता है, वे सभी पुस्तकें आपके यहाँ उपलब्ध हैं । कृपया पत्र पाते ही निम्नलिखित पुस्तकें ऊपर लिखे पते पर शीघ्र मूल्यदायिका (वी.पी.पी.) डाक द्वारा भेजने की कृपा करें ।आपकी शर्त के अनुसार पाँच सौ रुपए का पोस्टल ऑर्डर पत्र के साथ भेज रही हूँ । शेष रकम पुस्तक मिलते ही अदा कर दी जाएगी ।

पुस्तकों की सूची इस प्रकार है ।

क्र.	**पुस्तकों का नाम**	**लेखक**	**प्रतियाँ**
1.	गोदान	प्रेमचंद	10
2.	राष्ट्रपिता	पंडित जवाहरलाल नेहरू	5
3.	मालती जोशी की कहानियाँ	मालती जोशी	5

आशा है कि आप तुरंत पुस्तकें भेजने की कृपा करेंगे ।
कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ ।
धन्यवाद !

भवदीया,
रमा चिटणीस

टिकट

सेवा में,
श्रीमान व्यवस्थापक जी,
सूरज पुस्तक भंडार,
लक्ष्मी पथ,
पुणे ।

प्रेषक,
रमा चिटणीस,
10 / 405, महावीर पथ,
सांगली ।

2) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर लगभग 80 से 100 शब्दों में कहानी लिखकर शीर्षक दीजिए। **5**

महात्मा का न्याय

रामपुर नामक गाँव में लोग आनंद की जिंदगी व्यतीत करते थे । एक बार एक स्त्री ने किसी के घर से अन्न चुराया क्योंकि माँगने पर भी उसे कुछ खाने को नहीं मिला था । वह चोरी करते हुए पकड़ी गई । लोगों ने स्वयं यह निर्णय लिया कि इसे सज़ा दी जाए ।

लोग उस पर पत्थर फेंकने लगे । वह चिल्लाने लगी पर किसी ने उसकी एक न सुनी । उसी समय वहाँ से एक महात्मा गुजरे । उन्होंने जब यह देखा, तो इसका कारण पूछा । लोगों ने उस अन्न चुरानेवाली की सारी घटना कह सुनाई और कहा आप ही इसका फैसला करें, ऐसा कहा ।

महात्मा ने लोगों से कहा कि इसे दंड अवश्य मिलना चाहिए, क्योंकि इसने पाप किया है । यह सुनकर गाँववाले प्रसन्न होकर उसे दंड देने के लिए उतावले हो गए । महात्मा ने उन्हें रोका और कहा, पहला पत्थर, वह मारे, जिसने जीवन में कभी कोई पाप नहीं किया हो । यह सुनकर सब लोग एक-दूसरे का मुँह देखने लगे क्योंकि वहाँ कोई ऐसा नहीं था, जिसने कोई न कोई पाप न किया हो । सब लोगों के हाथों से पत्थर गिर गए । सभी ने महात्मा से क्षमा माँगी और उस स्त्री को माफ कर दिया ।

सीख : इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि सबसे बड़ा दंड अपराधी को क्षमा करना है ।

3) निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर पाँच ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर एक वाक्य में हो। **5**

i) विधाता ने हमें एक मुँह क्यों दिया है ?
ii) मनुष्य कौन-सी इंद्रियों से सामर्थ्यशाली बना है ?
iii) विधाता ने हमें क्या-क्या दिया है ?
iv) ईश्वर की मानव के लिए सबसे बड़ी देन क्या है ?
v) हमें दो कान किसलिए दिए गए हैं ?

उ.6. 1) प्रसंग लेखन। (लगभग 60 से 80 शब्दों में) **5**

मैंने देखा कि उसकी मुट्ठी में विविध प्रकार के बीज थे । मुझे समझते देर न लगी कि वह महिला क्या कर रही है !

उसने बताया कि एक बार उसके इलाके में भयंकर सूखा पड़ा था । ताल - तलैया सूख गए थे । कुओं का पानी रसातल में चला गया था । फसलें नष्ट हो गई थीं । उन्हीं दिनों एक महात्मा उस महिला के गाँव में आए ।

महात्मा जी ने गाँववालों से कहा, 'पेड़ लगाओ, पानी बरसेगा । अगले दिन महात्मा जी ने आगे के लिए प्रस्थान किया । कुछ लोगों ने महात्मा जी की बात मान कर पेड़ लगाए । वर्षा के दिन आए तो उस इलाके में अच्छी बरसात हुई । यह संयोग था या महात्मा जी के वचन का प्रभाव, किसी को नहीं पता तब से इस गाँव में पेड़ लगाने की परंपरा चल पड़ी । अब इस गाँव का कोई व्यक्ति गाँव से बाहर जाता है, तो वह अपने साथ कुछ बीज जरूर ले जाता है । वह उसे कहीं - न कहीं फेंक देता है, इस उद्देश्य से कि शायद उसमें से कोई बीज पेड़ बन जाए !

मेरे साथ सफर कर रही महिला अपने गाँव की उसी परंपरा का पालन कर रही थी । मैंने सोचा, धन्य है यह महिला और धन्य है वह गाँव, जिसने वृक्षारोपण का यह अनोखा तरीका अपना रखा है ।

2) स्वमत अभिव्यक्ति। (60 से 80 शब्दों में) **5**

यातायात की समस्या सभी के लिए परेशानी का कारण बन चुकी है । सभी इस समस्या से तंग आ गए हैं । आज अन्य मोटर-वाहनों के साथ मोटरसाइकिलों की संख्या इतनी बढ़ गई है कि हर दिन यातायात के समय समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है । यातायात के नियमों का पालन नहीं हो रहा है । आज सड़कों पर गाड़ियाँ ही गाड़ियाँ दिखाई दे रही हैं। इसी कारण आज का आम आदमी घूमने जाने के लिए भी कतरा रहा है । सरकार की ओर से यातायात की समस्या को हल करने के लिए कई प्रकार की योजनाएँ कार्यान्वित की गई हैं किंतु गाड़ियों की संख्या में आए दिन वृद्धि हो रही है । उनसे निकलनेवाला धुआँ वायु-प्रदूषण फैलाता है । हमें इस समस्या पर गंभीरता से विचार करना चाहिए ।

3) किसी एक विषयपर निबंध लिखिए। (60 से 80 शब्दों में) **5**

1) **<u>वृक्ष लगाओ, देश बचाओ</u>**

वृक्ष हमारे सच्चे साथी,
हमको सबकुछ दे जाते हैं,
पर हम तो हैं बड़े स्वार्थी,
इनको काट गिराते हैं ।"

प्रकृति जीवनदायिनी है । उसी के द्वारा बनाए गए स्वस्थ वातावरण में साँस लेकर हम जी रहे हैं । प्रकृति में वृक्षों और वनों का बहुत महत्त्व है । वृक्ष प्रकृति के पूरक हैं । वृक्ष धरती के हाथ हैं। धरती माता अपने इन्हीं वृक्षरूपी हाथों के द्वारा अपने मानवपुत्रों को जल, वायु तथा सुंदर व शुद्ध वातावरण प्रदान करती है ।

वृक्ष प्रकृति द्वारा मनुष्यों को दिया गया वह बहुमूल्य उपहार है, जिसके लिए मनुष्य उसका सदा ऋणी रहेगा । वृक्ष से हमें ऐसी कई चीजें मिलती हैं, जिनका हम अपने दैनिक जीवन में उपयोग करते हैं । वृक्ष से लकड़ी, कोयला, गोंद तथा कागज आदि चीजें प्राप्त होती हैं । वृक्ष हमें शुद्ध हवा देते हैं तथा ग्रीष्म ऋतु की तेज धूप में छाया देते हैं ।

वृक्ष अत्यधिक मात्रा में ऑक्सिजन छोड़ते हैं । इसी ऑक्सिजन से हमारा जीवन चलता है । प्राण-वायु के स्त्रोत वृक्ष ही हैं । बढ़ती आबादी व शहरीकरण के इस युग में वृक्षों की उपयोगिता और भी बढ़ गई है । निरंतर बढ़ रहे प्रदूषण के कारण आज हमारी औसत आयु घटती जा रही है । हम रोज नई-नई बीमारियों के चंगुल में फँसते जा रहे हैं । वृक्ष ही इसका एकमात्र विकल्प हैं, जो बढ़ते प्रदूषण पर नियंत्रण कर हमें इन बीमारियों से बचा सकते हैं ।

वृक्ष जल के वेग को रोककर बाढ़-नियंत्रण करते हैं । वन-भूमि को मरुस्थल बनने से रोकते हैं । वे नमी को सोखकर धरती की निचली परत तक पहुँचा देते हैं । जिससे भूमि की उपजाऊ शक्ति बनी रहती है । वृक्षों के अभाव में धरती के ऊसर बनने का खतरा बना रहता है तथा साथ ही साथ प्रकृति का संतुलन भी बिगड़ने का खतरा बना रहता है । वृक्षों के कारण वन तथा वन के कारण वन्य पशु-पक्षियों का जीवन सुरक्षित रहता है । वृक्षों के कारण ही विभिन्न ऋतुओं का चक्र भी यथासमय चलता रहता है । चाहे कश्मीर की वादियाँ हों या शिमला की पहाड़ियाँ, ये सभी तरह-तरह के वृक्षों के कारण ही सुशोभित हैं । वृक्षों पर ही प्राकृतिक सौंदर्य निर्भर है । प्रात:काल सूर्योदय के समय वृक्षों पर तरह तरह के पक्षियों का चहचहाना हमें धरती पर स्वर्ग की अनुभूति कराता है । यदि वृक्ष न हों तो संपूर्ण सृष्टि का विनाश निश्चित है । प्रकृति का संतुलन बिगड़ जाएगा । हमें न तो शुद्ध हवा मिलेगी और न ही स्वच्छ जल । रंगबिरंगे मीठे-मीठे फलों से हम वंचित हो जाएँगे । चारों तरफ मरुस्थल का दृश्य होगा । पशु-पक्षियों का आशियाना उजड़ जाएगा ।

जिस प्रकार हम अपने परिवार को प्रेम करते हैं, उनकी खुशिया को महत्व देते हैं, उसी प्रकार हमें अपने देशरूपी परिवार के प्रति भी आत्मीयता रखनी चाहिए । वृक्ष हमारे देश व समाज की रक्षा करते हैं। वृक्ष हमारी प्राकृतिक संपदा हैं । वृक्षों को काटकर हम अपनी जीवनडोर काटते हैं । अपने देश की बहुमूल्य संपदा नष्ट करते हैं । यदि हम अपने देश की भलाई चाहते हैं तथा अपने आनेवाली पीढ़ी के प्रति चिंतित हैं और हमारे मन में उनके भविष्य के प्रति दूरदर्शिता है तो हमें वृक्षरूपी धन का संरक्षण करना चाहिए । वरना प्रकृति का विनाशक रूप हमारे देश को तबाह कर देगा । लगातार हो रही प्राकृतिक आपदाओं के माध्यम से प्रकृति हमें सचेत करने के लिए मानों यह चेतावनी दे रही है ।

ओ पापी मानव ! क्यों पाप किए जाता है,
जिस आँचल ने तुझको पाला, उसे फाड़ता जाता है,
नहीं अभी यदि तू मानेगा, तो पीछे पछताएगा,
अपने ही हाथों से तू, अपनी चिता जलाएगा ।"

प्रकृति की यह चेतावनी हमें जल्द से जल्द समझ लेनी चाहिए तथा प्रकृति के आँचलरूपी वृक्ष की रक्षा कर हमें नित नए-नए वृक्ष लगाने चाहिए ।

2)

<u>श्रम का महत्व</u>

मेहनत ही ईश्वर, मेहनत ही पूजा,
इसके सिवा कोई मार्ग न दूजा ।।"

श्रम का अगर सरल अर्थ देखे तो वह है 'मेहनत' । मेहनत एवं लगन से किया हुआ कार्य ही श्रम कहलाता है । श्रम ही हमारे संपूर्ण जीवन का एकमात्र आधार है और विकास की पहली शर्त है ।

अंग्रेजी में एक कहावत है 'Work is worship' यानी श्रम ही सफलता की कुंजी है । सचमुच अगर देखे तो मेहनत ही भगवान की सच्ची पूजा है एवं काम ही सच्ची साधना है । जहाँ श्रम है वहीं स्वावलंबन है और जहाँ स्वावलंबन है वहीं स्वर्ग है । वेद-पुराणों में भी श्रम का महत्व पूर्ण रूपसे समझाया गया है एवं इसे ही सर्वश्रेष्ठ वस्तु की संज्ञा ही गई है । कृष्ण ने गीता के उपदेश में कार्य एवं मेहनत को सर्वोपरी रखा है । किसी की दया पर जीना मृत्यु के समान होता है । एक अपंग एवं अपाहिज व्यक्ति भी परिश्रम करके इज्जत की रोटी खाना चाहता है, वह भी दूसरों के भरोसे जीना पसंद नहीं करता है ।

श्रम से जीवन चलता है । समाज श्रम के आधार पर ही विभाजित है एवं अपने कार्य को सुचारु रूप

से कर पा रहा है । किसान के श्रम से ही हम सबका पेट भरता है एवं मजदूर हमारे कल कारखानों को चलाते हैं । वाहन चालकों भी मेहनत से वाहन चलाते है एवं हमारे कार्य को सुचारु रूप से पूरा करने में सहायक होते हैं । दवाखानों एवं अस्पतालों में डॉक्टर एवं नर्सो के परिश्रम के फलस्वरूप ही मरीजों को नया जीवन मिलता है । छात्र मेहनत एवं लगन द्वारा ही विद्या एवं योग्यता प्राप्त कर सफलता के नए-नए पायदानों को छूता है। श्रम में लीन रहकर ही वैज्ञानिक नए-नए आविष्कारों को जन्म देते है एवं समाज को संवर्धित करते हैं । एवं अपने देश का नाम दूर देशों में रोशन करते हैं । आज श्रम के द्वारा ही मनुष्य मंगल ग्रह तक पहुँच गया है एवं असंभव को संभव करने की कोशिश में लगा हुआ है । अगर इतिहास की बात करें तो जितनी भी सभ्यता का विकास हुआ है वह मनुष्य के श्रम के कारण ही हुआ है । यह मनुष्य का ही प्रयत्न था कि उसने पत्थरों से आग पैदा की । अगर वर्तमान युग पर गौर करे तो हम देखते है कि छोटे-छोटे देश अपने मेहनत के बल पर जाने जाते हैं । जापान वैसा ही एक छोटा-सा देश है जिसके देशवासियों के श्रम के कारण वह विश्व के तकनीकी क्षेत्र में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर सका है। उसी तरह अगर सिंह शिकार करने के लिए श्रम का प्रयोग नहीं करेगा तो वह भूखा ही रह जाएगा । अत: श्रम करनेवाले स्वयं अपने भाग्य विधाता होते हैं ।

शारीरिक स्वरूप की अगर वर्णन करें तो मेहनत करनेवालों का शरीर हमेशा तंदुरुस्त होता है एवं वह निरोगी होते है, उनकी पाचन शक्ति अच्छी होती है । मेहनत करने से अच्छा व्यायाम हो जाता है और उन्हें किसी भी प्रकार की बीमारी कभी छू नहीं पाती एवं उनका मन एवं तन दोनों ही हमेशा प्रसन्न होते हैं।

वर्तमान समाज में बड़े दुख की बात है कि आज हम मेहनत न करके सफलता को पाने की कोशिश करते हैं, जिसके लिए अगर हमें गलत रास्तों का चुनाव भी करना पड़े तो हम जरा-भी नहीं हिचकते हैं यह एक चिंता का विषय बनता जा रहा है । नौजवान अपने रास्तों एवं उद्देश्यों से भटकते जा रहे है, क्योंकि युवा वर्ग कम से कम मेहनत करके अधिक से अधिक धन कमाना चाहता है एवं हमारे जैसे विकासशील देश के लिए यह एक गंभीर चिंता का विषय है क्योंकि जिस तरह प्रतिभाओं का पलायन हो रहा है वह देश को खोखला बना रहा है । अत: देश के लोगों की अपनी मानसिकता बदलने की आवश्यकता हैं ।

श्रम वह पारस है जिसके स्पर्श मात्र से पत्थर सोना हो जाता है । अत: श्रम से दूर जाना उचित नहीं है हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि जीवन में सफलता की फसल श्रम के बीज से खिलते हैं । श्रम ही वह पथ है, जिस पर चलकर हमें सफलता प्राप्त होती है । कवि 'बच्चन' जी के शब्दों में –

'तू ना रुकेगा कभी,
तू ना थमेगा कभी,
तू ना थकेगा कभी,
कर शपथ, कर शपथ, कर शपथ,
अग्निपथ, अग्निपथ, अग्निपथ ....."

❖❖❖❖